जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 14 संख्याः 121 प्रभात हिण्डौन सिटी, गुरुवार 3 मार्च, 2022 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

ब्लैक थ्रोटेड मैंगपाइ जे प्रजाति मोनोटिपिक हैं, अर्थात इसकी किसी भी उप प्रजाति को अब तक मान्यता प्राप्त नहीं हुई हैं। कॉलीज़ मैंगपाइ जे के नाम से विख्यात इस चिड़िया पर ज्यादा रिसर्च नहीं हुई हैं। अद्भुत दिखने वाली और बेहद होशियार यह चिड़िया 58.5 से लेकर 76.5 सेन्टीमीटर तक लम्बी होती हैं और वजन लगभग 225-251 ग्राम होता हैं। इसका ऊपरी भाग नीला और आन्तरिक भाग सफेद होता हैं। परों के सिरे सफेद तथा चोंच, टांगें, सिर और कलगी काली होती हैं। आंख के चारों तरफ हल्के नीले घेरे व अधिकांश चिड़ियों का गला व छाती भी काली होती हैं। तोते जैसी तेज और तीखी आवाज वाली यह चिड़िया जंगल में जोड़े में या छोटे समूहों में रहती हैं। मैक्सिको के पसिफिक स्लोप से सदर्न सोनाटा और जैलिस्को व नॉर्थ वैस्टर्न कोलिका तक यह प्रजाति पाई जाती हैं। सन् 1993 के बाद से इसकी आबादी घटने के संकेत मिले हैं। यह चिड़िया दक्षिणी सैन डिएगो काउण्टी, खासकर तिउवाना नदी घाटी में ज्यादा मिलती हैं। ऐसा माना जाता हैं कि ये पक्षी मैक्सिको के राज्य बाजा कैलिफोर्निया में तिउवाना शहर से बच निकली चिड़ियों के वंशज हैं। इस क्षेत्र में पक्षियों का व्यापार बड़े पैमाने पर होता हैं। ये मोनोगैमस होते हैं अर्थात् जीवनभर के लिए जोड़ा बनाते हैं। इनका घोंसला इनकी खास विशेषता हैं। तिनकों से बड़े प्याले जैसी संरचना बनाकर उसमें नरम पदार्थ की परत बिछा देते हैं। मादा एक बार में सफेद से रंग के 3 से 7 अण्डे देती हैं। वाइट थ्रोटेड मैंगपाइ जे से इनका निकट सम्बंध हैं तथा इनमें अतः प्रजनन भी देखा जाता हैं। इस प्रकार से जन्मी सतंति को वाइट थ्रोटेड मैंगपाइ जे की उप प्रजाति माना गया हैं और इन्हें "लीस्ट कन्सर्न" वर्ग में रखा गया हैं। माना जाता हैं कि इनकी आबादी स्थिर हैं। वैज्ञानिकों का मत हैं कि इन चिड़ियों पर और रिसर्च की जानी चाहिए ताकि संरक्षण के स्तर की समीक्षा की जा सके।

गत तीन दिन से तेलंगाना के मु.मंत्री चन्द्रशेखर राव का दिल्ली में प्रवास रहा

इस प्रवास में चन्द्रशेखर भाजपा विरोधी विपक्ष का संगठन बनाने में व्यस्त रहे

- सब हैडिंग-24-वे दिल्ली के मुख्यमंत्री, केजरीवाल से मिले, क्योंकि आकलन के अनुसार पंजाब में आप की संभावित सफलता केजरीवाल को देश की राजनीति में लाकर खड़ा कर देगी तथा वे भाजपा विरोधी संगठन के एक महत्वपूर्ण स्तम्भ बन सकते हैं।
- चन्द्रशेखर राव का यह भी मानना है कि, भाजपा विरोधी फ्रंट के अन्य नेता, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव भी राष्ट्रीय नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखते हैं।
- चन्द्रशेखर राव, परन्तु इस भाजपा विरोधी फ्रंट में कांग्रेस की भी महत्वपूर्ण भूमिका मानते हैं।
- चन्द्रशेखर राव के इस भाजपा विरोधी रवैये ने तब से जोर पकड़ा है, जब से भाजपा ने तेलंगाना में आयोजित उपचुनाव में विजय प्राप्त की तथा ग्रेटर हैदराबाद म्युनिसिपल कॉरपोरेशन में भी भाजपा ने अच्छा प्रदर्शन किया।
- चन्द्रशेखर अब तेलंगाना के मु.मंत्री का पद, अपने पुत्र के लिये छोड़कर भाजपा विरोधी राष्ट्रीय राजनीति में कूदने की बात भी कर रहे हैं।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। विधानसभा चुनावों में भाजपा का प्रदर्शन खराब रहने की चर्चा के बीच तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव (के.सी.आर.) की दिल्ली में मौजूदगी ने विपक्षी मोर्चा बनाने नए प्रयासों की चर्चा को बल दे दिया है।

भाजपा के खिलाफ विपक्षी मोर्चा बनाने के पुराने समर्थक रहे के.सी.आर. की दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और किसान नेता राकेश टिकैत से मुलाकात होनी है।

केजरीवाल की पार्टी के पंजाब में अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद है और संभावना यह भी है कि आम आदमी पार्टी राज्य में सरकार भी बना सकती है। इसलिए के.सी.आर. आप नेता केजरीवाल को प्रस्तावित गठबंधन का महत्वपूर्ण स्तम्भ मानते हैं। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव के अच्छे प्रदर्शन की स्थिति में वे भी विपक्षी मोर्चा की अवधारणा में प्रमुख चेहरा बनकर उभर सकते हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पहले ही यू.पी. में समाजवादी पार्टी को समर्थन दे चुकी है और कल पूर्वी यू.पी. में हो रही अखिलेश यादव की रैली में भी भाग लेगी। बनर्जी भी "विपक्षी मोर्चा" के विचार की पक्षधर है और एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार जैसे कई नेताओं के साथ इस बारे में बातचीत भी कर चुकी हैं। के.सी.आर. प्रस्तावित मोर्चा से कांग्रेस को अलग रखने में पक्ष में नहीं है। के.सी.आर. ने असम के मुख्यमंत्री हेमन्त बिस्वा शर्मा की भी आलोचना की थी क्योंकि उन्होंने राहुल गांधी पर व्यक्तिगत टिप्पणियां की थीं। यही नहीं के.सी.आर. राफेल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पुतिन के इर्द गिर्द मंडरा रहे अति अमीर रूसी युद्ध के विरूद्ध मुखरित हुए

- यह एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है, क्योंकि रूस की तानाशाही प्रशासनिक व्यवस्था में सरकार के खिलाफ बोलना बहुत जोखिम का काम होता है।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। बिज़नैस और राजनीति का कोई आपसी मेल नहीं होता और राजनीतिक रूप से प्रेरित झगड़े में तो यह मेल और कम हो जाता है। चूंकि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के अति धनाढ्य आंतरिक गुट का प्रतिनिधित्व करने वाले रूस के सत्तारूढ़ कुलीन वर्ग के खिलाफ अमेरिका और यूरोपीयन यूनियन के प्रतिबंध प्रभावी हो गए हैं, इसलिए यूक्रेन का युद्ध इस सच्चाई को सामने ला रहा हैं।

इनमें से कुछ अमीर व्यक्ति अब इन प्रतिबंधों के दुष्परिणामों को अनुभव करने लग गए हैं तथा उन्होंने पुतिन के यूक्रेन आक्रमण के विरूद्ध बोलना शुरू कर दिया है।

सी.एन.बी.सी. की एक रिपोर्ट कहती है कि इनमें से किसी ने भी रूस के राष्ट्रपति का सीधे तौर पर जिक्र नहीं किया है, फिर भी, असंतोष के असाधारण स्वर उन्हीं के हाई प्रोफाइल सहयोगियों ने उठाए हैं। इनमें से कई लोग वे हैं जिनकी सम्पत्तियों का क्रेमलिन से काफी गहरा ताल्लुक है। यह रूसियो में बढ रहे मतभेद का संकेत है।

रूस के सबसे बड़े प्राइवेट बैंक "अल्फ़ा बैंक" के संस्थापक एवं देश के सबसे धनी व्यक्ति मिखाइल फ्रिडमैन इस संघर्ष के खिलाफ बोलने वाले पहले रूसी कारोबारी हैं। उन्होंने इस "त्रासदी" व "रक्तपात" को समाप्त करने की मांग की हैं।

फ्रिडमैन ने लंदन स्थित अपनी प्राइवेट इक्विटी फर्म "लैटरवन" के एक स्टाफकर्मी को लिखे गए एक पत्र में कहा कि उन्हें इस बात का "यकीन" है कि "युद्ध" कभी कोई उत्तर नहीं हो सकता। यह कर्मी यूक्रेन मूल का है और उसके माता-पिता वहां रहते हैं।

फायनैंशियल टाइम्स द्वारा पहली बार देखे गए इस पत्र में उन्होंने लिखा कि "यूक्रेन और रूस के लोगों से मेरा गहरा लगाव है और वर्तमान संघर्ष को मैं इन दोनों के लिए एक "त्रासदी" के रूप में देखता हूं।"

वह आगे लिखते हैं "मैं राजनीतिक बयान नहीं देता। मैं एक व्यापारी हूं, जिसकी रूस व यूक्रेन के अपने हजारों कर्मचारियों के प्रति जिम्मेदारियां हैं। मेरी गहरी धारणा है कि युद्ध कभी कोई उत्तर नहीं हो सकता। इस संकट से उन दो देशों में जान माल की क्षति होगी जो पिछले कई सौ वर्षों से आपसी भाईचारे के साथ रहे हैं।

फ्रिडमैन के कारोबारों में मोबाइल कैरियर वीओन भी शामिल है, जिसके सी.ई.ओ. कान तरज़िओग्लू ने सोमवार को सी.एन.बी.सी. से कहा था कि युद्ध को "जितना जल्दी संभव हो" रोका जाना चाहिए।

आगे यह जोड़ते हुए कि उनकी कंपनी युद्ध से बचकर भाग रहे यूक्रेन के लोगों को इन्टरनैट कनैक्टिविटी उपलब्ध करवा रही हैं, उन्होंने कहा कि "मेरा वास्तव में यह मानना है कि जितना जल्दी हो सके, इस पागलपन को रोकना चाहिए।"

यूरोपीयन यूनियन ने फ्रिडमैन और उनके बिज़नैस पार्टनर एवं स्टील दिग्गज एलैक्ज़ाई मोर्दाशोव व रूस के अन्य अति धनाढ्य लोगों पर सोमवार को प्रतिबंध लगा दिए। फ्रिडमैन ने इस पर यह कहते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी कि वह यह नहीं जानते कि इस आक्रमण को लेकर क्या रूस में कोई सवाल उठाया जाएगा, लेकिन रूसी कारोबारियों पर पूरी दुनिया में लगाया गया पूर्ण प्रतिबंध अनुचित प्रतीत होता है। इस बीच, मोर्दाशोव ने दो बंधु राष्ट्रों के युद्ध को एक "त्रासदी" मानते हुए इसे रोके जाने की मांग की, किन्तु आगे यह भी जोड़ा कि उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों का निशाना नहीं बनाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि "वर्तमान भू-राजनैतिक तनाव से मेरा कोई लेना देना नहीं है। मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि हमारे विरूद्ध प्रतिबंध क्यों लगाए गए हैं।"

धातुओं के बादशाह के रूप में विख्यात ओलेग डेरीपास्का, जो अमेरिकन प्रतिबंधों का लक्ष्य थे, ने पिछले सप्ताह "टेलीग्राम" में लिखा था: "शान्ति बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण होती है। समझौता-वार्ताएं शीघ्रातिशीघ्र शुरू हो ही जानी चाहिये।

रोमन अब्रामोविच, जो इंग्लैंड फुटबॉल टीम चेल्सी के अरबपति मालिक हैं, ने खुलकर तो कुछ नहीं कहा, लेकिन उन्होंने टीम का मालिकाना हक एक चैरिटेबल फाउन्डेशन को दे दिया। बताया जाता है कि वे सोमवार को बेलारूस में वार्ता में भी शामिल हो गये थे, जब यूक्रेन ने, "शान्तिपूर्ण समाधान" तक पहुँचने के लिये उनकी मदद माँगी थी।

रूस के धनिक अभिजात्य वर्ग की टिप्पणियाँ भी अन्य बड़ी-बड़ी हस्तियों की टिप्पणियों के साथ जुड़ गई, जिनमें अभिनेत्री अखेद्जाकोवा तथा नोबल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रेप व पोर्नोग्राफी

- सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका में मांग की गयी है कि, बलात्कार व पोर्नोग्राफी में सीधा संबंध है, अतः सभी राज्यों की पुलिस को निर्देशित किया जाये कि, "रेप" की घटना की तहकीकात करते समय, "पोर्नोग्राफी" का "एंगल" भी देखें।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। सुप्रीम कोर्ट में एक पब्लिक इन्ट्रैस्ट लिटिगेशन (पी.आई.एल.) दायर की गई है जिसमें ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एण्ड डवलपमैंट (बी.पी.आर.डी.) को यह निर्देश देने की मांग की गई है कि सभी राज्यों की पुलिस से पॉर्नोग्राफी और बलात्कार मामलों के बीच लिंक दर्शाने वाली जांचों का एक समयावधि का डेटा एकत्रित करे।

यह पिटिशन एडवोकेट नलिन कोहली (51) ने दायर की है जो भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं। पिटिशन में बताया गया है कि असम पुलिस की जांच से पता चला था कि 6 साल की बालिका से बलात्कार व उसकी हत्या के चारों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रूस के राष्ट्रपति पुतिन व विदेश मंत्री लावरोव भी आर्थिक पाबंदी के घेरे में आये

अमेरिका की देखा-देखी, यूरोपियन यूनियन व ब्रिटेन ने भी इन दोनों पर आर्थिक पाबंदी लगायी

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। अमेरिका ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और उनके विदेश मंत्री दमित्री लावरोव पर प्रतिबंध लगाने के एक निर्णय की घोषणा की हैं।

यूरोपीयन यूनियन और यू.के. ने भी इन दोनों के खिलाफ प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है।

इस बीच, बैंकिंग क्षेत्र में रूस का पहला शिकार बना है उसका सबसे बड़ा बैंक। ग्लोबल बैंक की यूरोपीय शाखा आज क्रैश हो गई। रूबल का मूल्य 25 प्रतिशत गिरकर प्रति डॉलर 112 रूबल रह गया है। इसका मतलब है आप 60 पैसे में एक रूबल खरीद सकते हैं।

देश के मुखिया और उसके विदेश मंत्री पर प्रतिबंध लगाया जाना इन दोनों पर एक सार्वजनिक तमाचा है और इसका तात्पर्य सरकार के प्रमुख के साथ कूटनीतिक संबंधों को एक तरह से तोड़ना भी है। इससे रूस की जनता के समक्ष भी उनकी बदनामी होगी।

ये दोनों ही नेता व्यक्तिगत रूप से आहत होंगे क्योंकि बताया जाता है कि इनके पास भारी दौलत है, जिसके अधिकांश हिस्से का पूरे विश्व में निवेश किया गया है। निस्संदेह, उनकी गलत तरीके से कमाई गई सम्पत्ति का पता लगाना और उसे फ्रीज़ करना काफी मुश्किल होगा। फिर भी, इन पर प्रतिबंध लगाने का अर्थ है कि इनकी सम्पत्ति को खोजने का काम शुरू हो जाएगा और फिर उसे सरकारी खजाने में जमा किया जाएगा।

सरकार के मुख्याओं के साथ ही रूस के अति धनाढ्य कुलीन व्यक्ति भी विश्वभर में जमा की गई अपनी सम्पत्ति से हाथ धो बैठने की आशंकाओं से भयभीत हैं। पिछले दस वर्षों में इनके निवेश का मुख्य स्थल ब्रिटेन रहा है।

लंदन की अधिकांश मूल्यवान जमीन-जायदाद को रूस के कुलीन वर्ग ने खरीद लिया है और इन प्रोपर्टीज़ में उनके बच्चे रह रहे हैं। यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद वे अनिश्चितता और चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि रूस के कुलीनों ने अपनी सरकार पर इस बात का दबाव डालना शुरू कर दिया है कि वह यूक्रेन के साथ गंभीरतापूर्वक बातचीत करे क्योंकि आर्थिक प्रतिबंध अब दु:खदायी लगने लगे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वसुंधरा राजे की कार को टक्कर मारी

- पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे जब विद्याधर नगर में गोविंद महाराज से मिलकर घर लौट रही थीं तब रास्ते में एक युवती ने अपनी कार से राजे की गाड़ी को टक्कर मार दी।

जयपुर, 2 मार्च (का.सं.)। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की मर्सिडीज़ कार को एक लड़की ने कार से टक्कर मार दी। हालांकि राजे को कोई चोट नहीं आई हैं। बताया जा रहा है कि लड़की ने वसुंधरा राजे माफी मांगी। राजे ने माफ़ करते हुए कहा कि कोई बात नहीं, लेकिन कार धीरे और सावधानी से चलाओ।

यह घटना विद्याधर नगर थाना इलाके के बियानी कॉलेज के सामने की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मस्जिद

- न्यूयॉर्क टाइम्स में प्रकाशित खबर के अनुसार दक्षिण कोरिया में भी मस्जिद के निर्माण का विरोध किया स्थानीय नागरिकों ने।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। मुस्लिम समुदाय को भारत में ही बहुसंख्यकों द्वारा प्रहारों का सामना नहीं करना पड़ रहा है, बल्कि दक्षिण कोरिया में भी उन पर हमले हो रहे हैं जहां उन्हें आतंकवादी की संज्ञा दी जा रही है।

न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार गतवर्ष दक्षिण कोरिया के दक्षिण पूर्वी भाग में एक परम्परावादी शहर दाएगु में 150 मुसलमानों ने मस्जिद बनाना शुरू किया तो स्थानीय निवासी एकत्र हो गए और कहा कि वे आतंकवादियों का गढ नहीं बनने देंगे। उनका कहना था कि मस्जिद बनने से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पुतिन आखिर चाहते क्या हैं?

रॉचैस्टर यूनिवर्सिटी के राजनीति शास्त्र के जाने-माने प्रोफेसर हाइन गोमैन्स ने रूस के राष्ट्रपति पुतिन के व्यक्तित्व का बारीकी से विश्लेषण कर, इस बात का जवाब देने का प्रयास किया है कि, रूस क्यों यूक्रेन युद्ध में कूदा और यह युद्ध अन्ततोगत्वा कैसे खत्म होगा

- प्रोफेसर के अनुसार पुतिन का यह युद्ध जीतना खतरनाक है, लेकिन उतनी ही खतरनाक स्थिति बनेगी अगर पुतिन यह युद्ध हार गये।
- प्रोफेसर ने प्रथम विश्व युद्ध का उदाहरण देते हुए अपनी पुस्तक में लिखा है कि, 1914 में जर्मनी ने यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि, वह युद्ध नहीं जीत सकेंगे, परन्तु जर्मनी के नेताओं ने चार साल यह युद्ध इसलिये खींचा क्योंकि, उन्हें युद्ध हारने पर देश की आंतरिक प्रतिक्रिया का पूरा आभास था।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों के एक विशेषज्ञ कहते हैं कि यूक्रेन का भाग्य पुतिन के पद पर बने रहने से बंधा हुआ है।

"हेन गोमान्स कहते हैं जब गोलाबारी शुरू हो जाती है, तो चीजें हाथ से निकल जाती है। यह बात जान लेना जरूरी है।" गोमन्स रॉचेस्टर विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर है तथा अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों, प्रादेशिक विवादों, देशों में युद्ध की स्थिति क्यों आती है तथा युद्ध किस तरह खत्म होते हैं-जैसे युद्ध संबंधी विषयों के विशेषज्ञ हैं।

वे कहते हैं, "मैं युद्ध विषयक अध्ययन इसलिये करता हूँ क्योंकि युद्ध बहुत भयावह तथा सही अर्थों में आतंकित कर देने वाला होता है।" वे कहते हैं कि यूक्रेन के हजारों नागरिक तथा खाइयों में मोर्चा संभाले यूक्रेन के सैनिक मिसाइलों तथा गोलाबारी के कारण मर रहे हैं जबकि उन्हें रूसी सैनिक दिखाई तक नहीं दे रहे।

प्रश्न: "पुतिन यूक्रेन पर हमला क्यों कर रहे हैं?"

उत्तर: "मैं देखता हूँ कि उनका दोहरा लक्ष्य हैं-वे प्रत्यक्षत: या अप्रत्यक्षत, यूक्रेन जैसे देशों को रूस में मिलाकर या कठपुतली सरकार के जरिये, रूसी साम्राज्य की पुनर्स्थापना करना चाहते हैं, चाहे वह पूववर्ती यू.एस.एस.आर. के रूप में हो या ज़ार-कालीन रूस के रूप में।

दूसरे संभावित उत्तर का संबंध रूस की घरेलू राजनीति की भूमिका से है, जिसे संघर्ष संबंधी स्तरीय साहित्य गंभीरता से लेता है। पुतिन ने देख लिया है कि पूर्व सोवियत संघ के विघटन से बने कुछ गणतंत्रों तथा पूर्व यूगोस्लाविया में क्या हुआ। उनमें से कई देशों में "कलर रिवॉल्यूशन्स" हुए उन्हें प्रजातांत्रिक बनाया गया। वस्तुत:, 2014 में यूक्रेन में कलर रिवॉल्यूशन ही तो हुआ था, जिसे पुतिन गलत रूप में चित्रित करते हुए सैन्य क्रांति बताते हैं। वे इस प्रकार की क्रांतियों को रोकना चाहते हैं तथा अपने इर्द-गिर्द लोकतांत्रिक देशों के घेरे को रोकना चाहते हैं, क्योंकि ये रूस के असंतुष्ट नेताओं को एक सुरक्षित स्थान उपलब्ध करा सकते हैं। तथा विरोधी नेतागण पुतिन के राजनैतिक वर्चस्व के लिये खतरनाक साबित हो सकते हैं।

प्रश्न: अभी क्यों?

उत्तर: इसका एक उत्तर तो यह हो सकता है कि वे अब इस काम को करने के मामले में स्वयं को पर्याप्त ताकतवर मान रहे हैं, जबकि पश्चिम अव्यस्थित स्थिति में दिखाई दे रहा है। वे नहीं चाहते कि उनके पड़ौस में तेजी से पश्चिमीकृत देश हों। इसके बजाय, वे यह चाहते हैं कि उनके पड़ौस की सरकारें उनकी कठपुतली बन कर रहें, जिन्हें वे अपने नियंत्रण में रख कर, अपनी निजी घरेलू राजनैतिक स्थिति को सुरक्षित एवं अक्षुण्य रख सकें। वस्तुत:यह उनकी केवल राजनैतिक स्थिति ही नहीं है। अगर वे सत्ताच्युत होते हैं तो उनका जीवन भी सुरक्षित नहीं रहेगा। यह सुनिश्चित एवं स्पष्ट है कि उन पर मुकदमा चलेगा तथा वे जेल जायेंगे। उनकी बहुत बुरी गति हो सकती है, उनकी कैसी स्थिति हो सकती है, इस बात को, मेरे खयाल से, वे भली भांति जानते हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)